GRIZZLY COLLEGE OF EDUCATION

Recognised by ERC, NCTE: Affiliated to VBU Hazaribagh

प्रतिकृति

Bulletin ISSUE Nov-DEC - 2016

From the Directors' Desk

पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान आवश्यक तो है ही परन्तु व्यावहारिक ज्ञान अत्यावश्यक है। व्यावहारिक ज्ञान व्यक्ति को संयम, नम्र, धैर्यवान और सफल बनाता है। हमारे महाविद्यालय में औपचारिक के साथ व्यावहारिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। शायद यही कारण है कि यहाँ के छात्र च्व्ज में काफी सम्मान अर्जित करते हैं और यहाँ के च्वेनज छात्र अच्छे शिक्षक के रूप में स्वयं को स्थापित किया है। यहाँ के छात्र बहुत सरल भाव से क्लिष्ट विषयों को पढ़ाने में अपनी छवि बनाया है। कॉलेज टीम को और सभी छात्र–छात्राओं को हमारी शुभकामनाएँ।

नव वर्ष सबके लिए शुभ हो।

मनीष कपसिमे | **अविनाश सेठ** | **अरूण मिश्रा**

From Principal's Desk

Dr. Sanjeeta Kumari
Principal

नवम्बर–दिसम्बर माह (2016) अनेक विशिष्ट उपलब्धियों से युक्त रहा। यह महाविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति और विकसित होने का शुभ संकेत है। यह ज्ञान और कौशल का मिश्रित परिणाम है। द्विवर्षीय 2015–17 का बी0एड0 का विश्वविद्यालीय परीक्षा परिणाम अच्छे अंकों से शत्–प्रतिशत रहा। 2016–18 के प्रशिक्षुओं का कक्षा शिक्षण अपने निर्धारित अवधि से प्रारम्भ हुआ। इसका श्रेय कुशल अध्यापकों, शिक्षकेत्तर सदस्यों और प्रशिक्षुओं को जाता है। इसके पश्चात् महाविद्यालय में शैक्षणिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और ज्ञानात्मक मूल्य विकसित हुए। इस कड़ी में "Work is Workship" फार्मूले के तहत अनेक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्यक्रम आयोजित हुए। ऐसे विशिष्ट कार्यक्रमों में सामाजिक भ्रमण, असहाय लोगों के मध्य कपड़े और कम्बल का वितरण, चैरिटी मेला का आयोजन, गणित दिवस, बचपन बाल मेला का आयोजन में सहभागिता, संविधान दिवस, प्रतिभा खोज दिवस, पुस्तकालय दिवस और वर्षान्त में क्रिसमस दिवस, जो प्रेम और करूणा का संदेश देता है – बहुत ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ। महाविद्यालय के प्रशिक्षुओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी अद्‌भूत प्रतिभा का प्रदर्शन किया – यह एक मिशाल है और स्मरणीय रहेगा। इस प्रकार महाविद्यालय में कई उल्लेखनीय कार्यक्रम की उपलब्धियों पर मैं अपनी ओर से कॉलेज प्रबन्धक और महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

नव वर्ष की मंगलकामनाओं के साथ ——————

Dr. Sanjeeta Kumari
Principal

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Activities of the Month Nov & Dec' 2016

Charity Fun Fest

Blanket Distribution

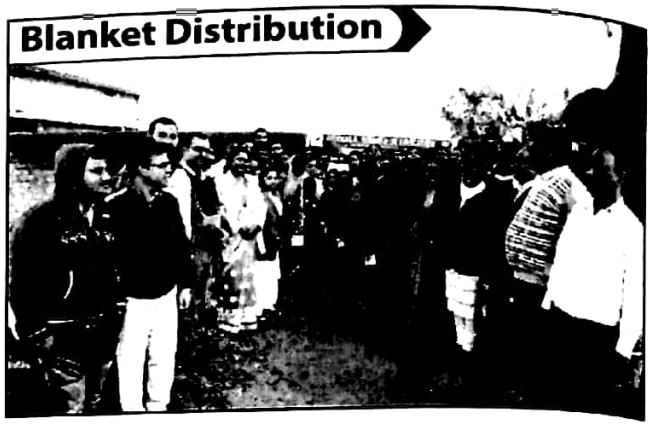

Organising Bachpan Fate

Constitution Day

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Social Visit to Hazaribag

World Aids Day

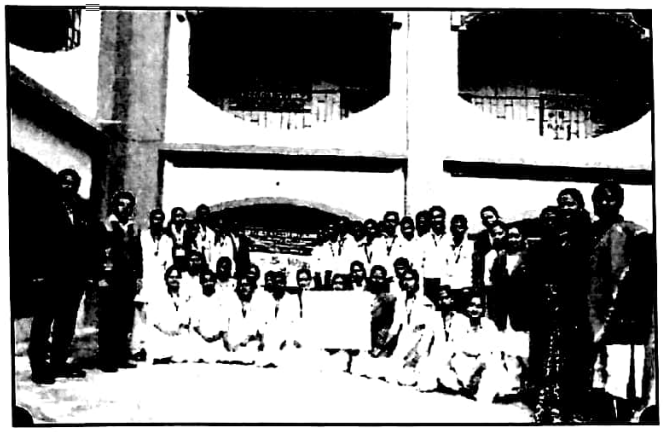
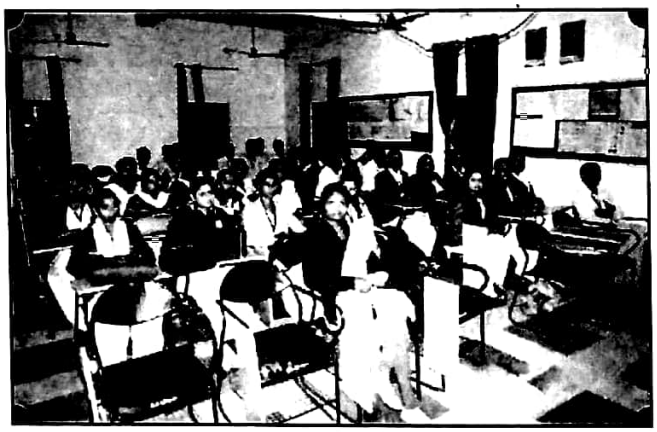

Talent Search Competition

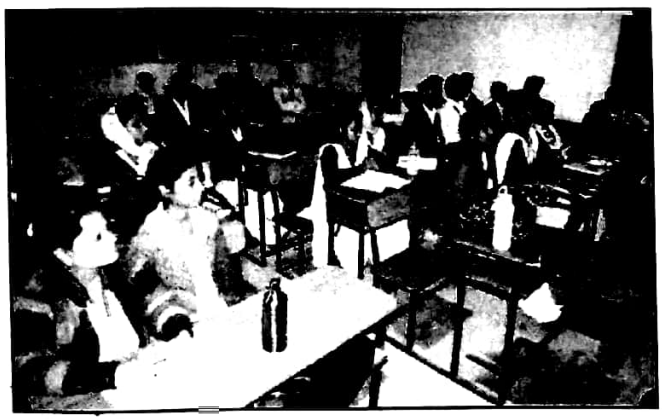

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Library Day

Maths Day

Christmas Celebration Day

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Teacher Education in Digital Era! Promises and Pitfall

We are in the first mid of 21st century. Education in this century is progressive and technical based. Gone the days when a teacher was using chalk board. The day today is of PPT and Projector. Advanced technological perspectives are seen in this regard. Today, a student uses Google & other search engines when a teacher teaches. If any sort of data lacks the student see the teacher with exclamation marks.

There is urgent need in this present era when digitization is engulfing the whole system. A teacher needs to focus on the upcoming trend and advancement. As a teacher, we emphasizes on the use of technology for progress in this era.

The digital age has not simply changed the nature of resources and information; it has transformed several basic social and economic enterprises. Both information and access to it have grown exponentially; a significant potential for using varied in numerous ways for instruction and learning has emerged. However, several issues related to the educational uses must be addressed if we are successfully to implement resource-based learning environments. In this topic, we trace the changing nature of resources and perspectives in their use of learning in the digital age, describe the overarching structures of resource-based learning environments, and identify key challenges to be addressed.

Promises in Digital Era –

- A teacher should use the technology when it is needed.
- A teacher should not comply fully with the technology like lecturing on certain topics, etc.

Pitfalls in Digital Era –

- A teacher should not rely fully over Wikipedia. It may contain error.
- Wherever there is no availability of power, the digitization is of no use, etc.

Certainly, the advancement in the century helps a teacher educator but it is should be optimally used.

Prashant Kumar

कुपोषण

कुपोषण कि बीमारी प्रायः गरीबी, अशिक्षा, अन्धविश्वास का ही परिणाम होता है। मानव शरीर में संतुलित पौष्टिक आहार की कमी होना ही कुपोषण का कारण है। कुपोषण कि बीमारी लगभग गरीब परिवार के बच्चों में जिनकी उम्र 6 माह से 5 वर्ष है। गरीब परिवार में पल रहे बच्चों में पौष्टिक आहार की कमी होती है, जिसके कारण वे अन्य बीमारियों के भी शिकार हो जाते हैं जैसे – रतौंधी, सुखा रोग, स्कर्वी, बेरीबेरी आदि। कार्बोहायड्रेट और प्रोटीन कि कमी से कुपोषण की बीमारी होती है।

गरीबी और अशिक्षा के कारण लोग यह नहीं जान पाते हैं, कि इस उम्र के बच्चों में किस तरह के खान–पान का होना जरुरी है जिससे उसका शारीरिक विकास हो सके। अगर उन्हें जानकारी भी होती है तो वे इन सब चीजों को जुटाने में असमर्थ होते हैं। अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जाता हैं कि गरीब परिवार के गर्भवती महिलाओं को ठीक प्रकार से खान–पान नहीं दिया जाता है। जितनी उसे पौष्टिकता कि आवश्यकता होती है, समुचित रूप से वह नहीं मिल पाती है। जिसके कारण महिलाओं का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है तथा इसका सीधा असर गर्भ में पल रहे शिशु पर पड़ता है, जो अन्य बीमारियों से भी ग्रसित हो जाता है ।

ज्यादातर महिलाओं में खून कि कमी होती है। लेकिन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अब के आधुनिक युग में सभी भारतीय नागरिक शिक्षित हो रहे हैं जिसके कारण अन्धविश्वास का जाल खत्म हो रहा है तथा किसी भी बीमारियों को अब आगे नहीं बढ़ाया जाता है और भारतीय समाज में लोगों को जागरूक करने के लिए हर जगह स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है, जहाँ हर वर्ग के लोग बीमारियों का इलाज करवा सकें।

कुपोषण के कई कारण हमारे समाज में आज भी मिलते हैं, जिसका प्रत्यक्ष उदहारण अन्धविश्वास है । अन्धविश्वास के कारण भारतीय समाज तथा ग्रामीण क्षेत्र के लोग इसे जादू–टोना समझकर इन बीमारियों में झाड़–फूंक, तंत्र–मंत्र का सहयोग लेते हैं, जिनके कारण कुपोषण पीड़ित बच्चे या गर्भ में पल रहे बच्चों कि मृत्यु हो जाती है। कभी–कभी यह भी देखा जाता है कि गर्भस्थ स्त्री अगर बीमार रहती है तो उसका भी तंत्र–मंत्र से इलाज करवाया जाता है तथा इसके परिणामस्वरुप माँ और बच्चे दोनों का जीवन समाप्त हो जाता है।

इन सभी पर विचार करते हुए हमारे भारतीय सरकार के द्वारा इस बीमारी के निदान हेतु कुछ कदम उठाये गए है, जैसे – ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम–पंचायत, मुखिया के सहयोग से स्वस्थ्य केंद्र खोले गए है, जहाँ सभी ग्रामीण वर्ग के लोग अपने स्वास्थ्य कि जाँच करवाते है। ग्रामीणों में भी जागरूकता बढ़ रही है तथा वे लोग भी शिक्षित हो रहे हैं तथा बीमारी मिटाने के लिए दृढ संकल्प होकर तैयार हैं।

रिंकी कुमारी
709, 2016 -18

कन्या भ्रूण हत्या

कन्या भ्रूण हत्या आज के समय में एक अभिशाप बन गयी है इस अभिशाप के कारण न जाने कितनी मासूम लड़कियां हर रोज इनका शिकार हो रही है। जिन्हें जन्म से पहले ही मार दिया जाता है, उन्हें उनकी जिंदगी जीने से पहले ही मौत की नींद सुला दी जाती है जिसमे उस मासूम जान की कोई गलती नहीं होती लेकिन फिर भी लोग उन्हें सजा देते है।कुछ लोगों की यह धारणा है की बेटियां उनके लिए बोझ है सिर्फ वो समस्या बढाती है और समाज में उनकी इज्जत खराब करती है, शादी के समय उन्हें दहेज देना पड़ेगा जिसके कारण लोग उन्हें बोझ समझते है। केवल इसलिए की जन्म लेने वाला बच्चा एक लड़की है वर्षों से समाज में कन्या भ्रूण हत्या की कई वजहें रही है।

२००१ के आंकड़ों के अनुसार पुरुष और स्त्री अनुपात १००० से ९२७ है कुछ वर्ष पहले लगभग सभी जोड़े जन्म से पहले शिशु के लिंग को जानने के लिए लिंग परीक्षण जांच का इस्तेमाल करते थे और लिंग लड़की होने पर उसे मार दिया करते थे। कन्या भ्रूण हत्या शताब्दियों से चली आ रही है खासतौर से उन परिवारों में जो केवल लड़का ही चाहते हैं इसके पीछे विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक कारण भी है अब समय बहुत बदल चुका है लेकिन फिर भी कुछ मान्यताएं आज भी बहुत सारे परिवारों में कायम है । लड़कियों के अधिकार के बार में जागरूकता कार्यक्रम जैसे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ या बालिका सुरक्षा अभियान आदि बनाये गए हैं। लोगों का मानना है की लड़के परिवार के वंश को जारी रखते है जबकि वो ये नहीं समझ पाते की दुनिया में लड़कियां ही शिशु को जन्म देती है, लड़की को बोझ समझने की मुख्य वजह लोगों की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी है। अभिभावक और घर के बड़े बुजुर्ग समझते है की पुत्र होने में ही सम्मान है जबकि लड़की होना शर्म की बात है। आमतौर पर माता–पिता लड़की शिशु को टालते है क्योंकि उन्हें लड़की की शादी में दहेज के रूप में एक मोटी कीमत चुकानी पड़ती है।

नेहा कुमारी
726, 2016 -18

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

लड़कियां, महिलाएँ और गरीबी

मेरे विचार से लड़कियां, महिलाओं पर गरीबी का अधिक प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि गरीबी के कारण ही है उनके माता पिता उन्हें पूर्ण शिक्षा नहीं दे पाते हैं और गरीबी के कारण ही उनका बाल विवाह कर दिया जाता है, उनसे बाल मजदूरी करवाई जाती है जैसे घर के काम करने पड़ते है, पैसे के लिए किसी के घर में झाड़ू पोछा लगाना खाना बनाना आदि। इसके कारण ही उनके माता पिता उन्हें सरकारी स्कूल से शिक्षा दिलवाते हैं वह भी पूरी नहीं, आधी अधूरी मिलती है क्योंकि उनके माता पिता साक्षम नहीं होते है। गरीबी के कारण महिलाऐं और लड़कियां अच्छा कपड़ा नहीं पहन पाती और एच कहना नहीं कहती है, और वे अगर कभी बीमार पड़ती है तो गरीबी के कारण अच्छा इलाज नहीं करवा पाती है । गरीब व्यक्ति भ्रूण हत्या भी करवाते है क्योंकि दहेज की मांग इतनी बढ़ चुकी है की गरीब माता–पिता खर्च करने में साक्षम नहीं होते है इस कारण भी लड़कियों को जन्म होने से पहले ही गर्भ में हत्या कर दी जाती है और अगर कोई औरत लड़की को जन्म देती भी है तो उसके ससुरालवाले उसको तंग करते है, प्रताड़ित करते है और उन्हें सताया जाता है

अगर गरीबी दूर करनी है तो हमें लड़कियों की सेहत, शिक्षा और आत्मनिर्भरता को बेहतर बनाने के लिए कदम उठाने पड़ेंगे और हम सभी लोगों काजागरूक करना चाहिए। अगर सभी लड़कियां और महिलाऐं शिक्षित होगी तो उन्हें गरीबी की मार नहीं झेलनी पड़ेगी। वह अपने लिए आय का श्रोत ढूंढ सकती है, शिक्षा के द्वारा ही हम गरीबी को दूर कर सकते है इसके लिए हम सभी को जागरूक रहना है ।

सरस्वती कुमारी
728, 2016 -18

बिटिया की पुकार

माँ, आज जगत की श्रम मिट जाने दो
ममता की हवक आज फिर बस जाने दो ,
माँ, जननी बन जगत के मन को तेंदम दो,
भेद–भाव बेटे–बेटियों की आज मिट जाने दो
ना रोको आज जाने दो
बन कर काली खिल जाने दो
नैनों में सपने सजाये
आँचल में छिप जाने दो

बिटिया हूँ माँ तेरी,
दहंद की चिड़िया बन जाने दो
माँ, ना चाहत करुँगी धन दौलत की ,
बस घर के एक कोने में बस जाने दो
बन ना सकूँ राजकुमारी मैं तेरे घर की
पर हर लुंगी हर दर्द माँ तेरी
बस इस जगत में आ जाने दो ।

संध्या कुमारी
713, 2016 -18

चींटी की दूरदर्शिता

कनखजूरे ने चींटी को भारी–भारी सामान उठाकर ले जाते हुए देखा तो व्यंग करते हुए कहा अरे!!! चींटी बहिन!!! तुम्हे पता नहीं संग्रह करने वाले लोग पापी होते है और मैं स्वभाव से ही संत हूँ। चींटी ने कहा=कनखजूरे भाई !!! भोग के लिए और दूसरों को दुःख देने के लिए संग्रह करना गलत है, पर भविष्य की सोचकर उचित तैयारी करना, दूरदर्शिता। यह सोचकर कानखजूरे मुंह बनाकर चींटी की बात को एक कान से संकर दूसरे से निकल दिया और वाहन से चला गया।

थोड़े दिनों बाद बरसात के दिन शुरू हो गए। खाने के चीजों की कमी हो गयी, सभी परेशांन थे। कानखजूरे को बहुत दिन से कुछ कहने को नहीं मिला था और यह भटकता हुआ चींटियों के पास पहुँचा और भोजन की याचना करने लगा। चींटियों ने खुशी से एकत्र की हुई सामग्री उनके आगे रख दी। तब जाकर कानखजूरे की आँख में आंसू आ गए और अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने चींटी से क्षमा मांगी ।

कुमारी अभिलाषा मिश्रा
724, 2016 -18

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Best House of The Month **Nov' 16 : Aristotle House**
Best House of The Month **Dec' 16 : Radhakrishnan House**

ACHIEVEMENTS

100% Attendance in Nov' 2016

Name	Roll No.	Name	Roll No.
Anita Kumari	601	Sabita Kumari	612

100% Attendance in Dec' 2016

Name	Roll No.	Name	Roll No.
Dolly Rani	707	Priya Kumari	717
Suraj Kumar	722	Kumari Abhilasha Mishra	724

Book - Post

Editorial Board

Chief Editor :
Dr. Sanjeeta Kumari

Editors
Prof. V. N. Pandey
Prof. P. Kumar

Student Editors
Pankaj Kumar Verma &
Kumari Abhilasha Mishra

To

PRINTED AT BHAGWATI PRESS, JHUMRITELAIYA, PH.: 06534-222453

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner